International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 12 No.2 Nov-Dec 2024

गोरबंजारा समाज का तिज त्योहार महोत्सव

प्रा. डॉ. दत्ता उद्धव जाधव.
इतिहास विभाग प्रमुख. व मार्गदर्शक
श्रीरेणुकादेवी कला. वाणिज्य आणि विज्ञान महाविद्यालय, माहूर.
ता. माहूर जि. नांदेड.
Corresponding Author: प्रा. डॉ. दत्ता उद्धव जाधव.
Email: Jadhavdu24@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.14408993

प्रस्तावना:

विश्व की संस्कृति मे गोरबंजारा समाज की संस्कृतीका एक विशेष पहचान है | गोर बंजारा समाज का इतिहास बहुत प्राचिन रहा है | इस समाज का इतिहास लिखीत या भौतीक ऐतिहासीक साधनों से जादा बंजारा लोग गितो व्दारा जतन किया गया है | गोर बंजारा समाज में अनेक सण त्योहार मनाये जाते हैं। गोर बंजारा समाज निसर्ग पुजक हैं। बंजारा समाज हर त्योहार में निसर्ग के पुजा करते है। समनक के त्योहार के समय जमीन पर ज्वार के आटे से गोल आकार में आधिक चिन्ह अंकित किया जाता है। और उसके उपर जल से भरा हुआ लोटा में निम पेड़ की छोटे पाच टहनीया रखकर पुजा करते हैं। पोला के त्योहार के समय घरों के दरवाजे के दोनों तरफ से पलस (ढाकडा) पेड़ की बड़ी टहानिया रखकर पुजा करते हैं। दिवाली त्योहार के समय गाईगोधन के दिन कुवांरी लडकियों द्वारा हर घरों के सामने गाय के गोबर में लांबडी जैसे गाय के खाने का चारा लगाया जाता है। गोर विवाह के समय गोर वधूवर मुसल के फेर लेते हैं। विवाह के सात दिन पहले मूसल के आसपास ताग के बिज लगा कर बड़ा करते हैं। इस प्रकार गोर बंजारा समाज में अनेक त्योहार मनाये जाते है।

तिज त्योहार बंजारा समाज में एक महत्वपूर्ण त्योहार है। तीज का त्योहार प्रकृति पर छाप छोड़ने वाली पहली गोर बंजारा समाज की गौरी नामक कुवांरी लड़की की गहुँ के बिज की अनुसंधानकर्ता (वैज्ञानिक) होने की खुशी का प्रतीक है। गोर बंजारा समाज में तिज महोत्सव धुमधामसे मनाया जाता हैं। गोर बंजारा समाज में तिज त्योहार के समय में कुवांरी लडकियों द्वारा बांस की टोकरी में गहुँ के बिंज को बोया जाता है। एक द्रोण चलोकडा/चलोकडी (पिटा/पिटी) याने चिड़िया के लिए बोया जाता हैं। यही गोर बंजारा समाज में पशु पक्षी के प्रति प्रेम की भावना को दर्शाता है। गोर बंजारा समाज में "**किडि मुगी जिव जिन्दगानीन कोर-गोरुन सेन साईं वेस**" एक वैश्विक मानवी मुल्य प्रार्थना है। गोरधाटी याने गोर संस्कृतिक की परंपराओं में सिंधुघाटी की संस्कृति का छाप पडा है। **" तू मेयरगडेती आयीये सोनकी ; मोयनारो दळ भी जागो "** । " **तू तीजेरी सोजा लायीये सोनकी ; मोयनारो दळ भी जागो " !!**

गोर बंजारा समाज की गोरधाटी का इतिहास पाच हजार साल पुराना है। गोरबोली के गीतों में आज भी जीवित है। "**तू मेयरगडेती आयीये सोनकी**" याने गोर बंजारा समाज की सोनकी नामक स्त्री मेयरगड की रहने वाली थी। मेहरगढ़ एक नवपाषाण स्थल है। जो पाकिस्तान के बलूचिस्तान के मैदानी इलाके में बोलनदर्रे के पास स्थित है। मेहरगढ़ दक्षिण एशिया का सबसे पुराना कृषि केंद्र है। अक्सर यह माना जाता है कि मेहरगढ़ के लोग उपजाऊ सिंधु घाटी में चले गए क्योंकि जलवायु परिवर्तन ने बलूचिस्तान के क्षेत्र को और अधिक शुष्क बना दिया था। मेहरगढ़ प्राचीन गांवों में से एक था। यहाँ के लोगों ने गेहूँ और जौ उगाना सीखा था। "**तू तीजेरी सोजा लायीये सोनकी**" याने इस मेहरगड की सोनकी द्वारा गहुँ के अनुसंधान (पेटेन्ट) को मोहनजोदड़ो (मोयना) लाया गया था। लगभग 2500 ईसा पूर्व निर्मित, यह प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता की सबसे बड़ी बस्ती थी। और दुनिया के प्रमुख शहरों में से एक थी। जो प्राचीन मिस्र, मेसोपोटामिया, मिनोअन क्रेते और नॉर्टे चिको की सभ्यताओं के समकालीन थी। "**मोयनारो दळ भी जागो**" याने मोहनजोदड़ो में गहुँ के अनुसंधान (पेटेन्ट) सोनकी द्वारा लाया गया था। इसलिए शहरवासी (दल) भी खुशियाँ का तिज महोत्सव मनाने के लिए जाग गया था। यही गहुँ के बीज सिंधु घाटी की पडीत जमीन पर गोर बंजारा स्त्रियों द्वारा बोया गया था। कृषि उपजाऊ बनाने का तरीका सबसे पहले गोरमाटी स्त्रियों द्वारा प्रतिपादित किया गया था। गोरमाटी मातृसत्तात्मक संस्कृति में 'तीज उत्सव' पारंपरिक रूप से कुंवारी लड़कियों का त्योहार माना जाता है। लेकिन महिलाओं की भागीदारी भी महत्वपूर्ण मानी जाती है। तीज के बीज महिलाओं द्वारा बोए जाते हैं। और लड़कियों को अंकुरित बीजों को नौ दिनों तक प्रतिदिन पानी छिड़क कर संरक्षित करना होता हैं। और नौ दिनों के बाद नायक के आदेश से तोड कर पानी में बहाया जाता है।

चलोकडारो दोना" याने गोर बंजारा समाज की लड़कीने गहुँ के संसोधन को पलाश (ढाकडा) के पते के द्रोण में किया था। चलोकडा याने गौरैया पक्षी (sparrow) इस पक्षी के मुहं

से जमीन पर गिरा हुआ दाना उठाकर पलाश के पते के द्रोण में मिट्टी डालकर और अंकुरित पौधे की परिपक्वता तक पहुंचने के बाद गहुँ बना था। गहुँ पेटेन्ट की मुल संकल्पना गैरैया चिड़िया से लिया गया था। इसलिए उसके सन्मान में यह चलोकडारो दोना बोया जाता है। लेकिन यही संशोधित द्रोण चोरी हो जाता है। लड़कियां नृत्य में तल्लीन होती हैं। द्रोण को धुंडणे के लिए लड़कियाँ भागने लगती हैं। वे चुराए गए द्रोण (चलोकदारो दीना) को पुनः प्राप्त करने के प्रयास करतीं हैं। लडकिया बच्चों से अनुरोध करते हैं। बच्चे द्रोण लौटाने को तैयार नहीं रहतें। जब लड़के द्रोण में तीज लेकर भागते हैं, और लड़कियां आदरपूर्वक उसे लड़के से छीन लेती हैं। उसे **"दोना खोसायरो"** कहते हैं। इस द्रोण को **"चलोकडारो दोना"** कहते हैं। गहुँ के बिज बोए गए अंकुर और अंकुरित पौधे परिपक्वता तक पहुंचने के बाद फूलते हैं। और उसकों अनाज का दर्जा दिया जाता है। यही अनाज आजीविका के साधन के रूप में मनुष्य के लिए उपयोगी हैं। विषय को ध्यान में रखते हुए, यह याद रखना भी महत्वपूर्ण है कि रूसी वैज्ञानिक ने अनुमान लगाया था कि कृषि का आविष्कार सबसे पहले महिला जाति द्वारा किया गया था। कुछ लोगों के अनुसार, गेहूं सबसे पहले खोजा गया खाद्यान्न था। और आश्चर्य की बात यह है कि गेहूं के अंकुरित पौधे को 'तीज़' कहा जाता है। 'तीज़' कृषि अनुसंधान का एक हिस्सा है।

गणगौर : गोर बंजारा समाज में तिज त्योहार के साथ गणगौरी-गणगोरा नामक शक्ति की पुजा करते हैं। गणगौरी-गणगोरा मिट्टी से पुरूष और स्त्री का प्रतिरुप बनाया जाता है। यह महिलाएं ही थीं जिन्होंने सबसे पहले यह पता लगाया कि मानव प्रयास से जो बोया जाता है। वह बढ़ता है, पुरुष मंडली ने इस अलौकिक शक्ति को 'गणगोर' और 'शिवपार्वती-सर्जनशक्ति' का नाम देकर एक समझौता प्रस्तुत किया है। इस खोज को आगे बढ़ाते हुए कि एक अलौकिक शक्ति है जो अंकुरण प्रक्रिया को पहला धक्का देता है। यही कारण है कि प्रजनन प्रक्रिया में नर बीज मादा बीज जितना ही महत्वपूर्ण है। इस अलौकिक शक्ति की प्रतीक देवी नटेश्वर को गोर बंजारा संस्कृति में 'गणगोर' के नाम से मान्यता प्राप्त है। प्रजनन शक्ति का प्रतीक मानी जाने वाली इस अलौकिक शक्ति को गोरधाटी की मातृसत्तात्मक संस्कृति में 'गणगोर' के रूप में सामाजिक रूप दिया गया है।

ढंबोली : ढंबोली याने तिज त्योहार मे गोर बंजारा समाज द्वारा किये जाने वाली विधी। इस समय गहुँ की रोटी और गुड़ को मिलाकर चुरमा बनाया जाता है। इस चुरमा के लडु बनाया जाता है। और उसे तिज के सामने प्रसाद चढाये जातें हैं। इस चुरमा को एक सुप में डाल कर पडोसियो को प्रसाद बाट दिया जाता है। गणगौर को यह चुरमा का प्रसाद चढाया जाता है। यह गणगौर का पसंदीदा पदार्थ माना जाता है। चुरमा मोतीचूर लाडू का पुर्व आविष्कार है। ढंबोली यह विधी भगवान् कृष्ण की जन्माष्टमी दिन बनाईं जाती है। और उस चुरमा को काला की तरह बाट दिया जाता है। इस प्रकार गोर बंजारा समाज में अलग ठंगसे उत्सव मनाये जाते हैं।

प्रा. डॉ. दत्ता उद्धव जाधव.

सांराश :

गहु के बिज को तीज कहा जाता है जब गोरबंजारा समाज सिंधु घाटी में रहते थे। उसे समय गहु के बिज के अनुसंधान गौरी नामक लड़की के द्वारा किया गया था। इसी तिज के त्योहार पर गणगौरी की मुर्ती बनाकर उसकी पुजा की जाती है | तिज त्योहार का उत्सव दस दिन तक मनाया जाता है | जिसे कुवारी लडकी सुबह शाम दो वक्त तीज गहु के बिज को टोकरी मे मिटी के अंदर बोकर उसे पानी डालती रहती है | जिसे गहु के अन्नाज को सारी दुनिया बडे आनंद से खाती है |

संदर्भ ग्रंथ :

1. बळीराम पाटील : बंजारा लोकांचा इतिहास : दुर्गा प्रकाशन, कारंजा लाड.
2. बळीराम पाटील : आलेख समाज प्रगतीचा : दुर्गा प्रकाशन, कारंजा लाड.
3. रीतेश हरीष पवार : साप्ताहिक वसंतराज : संपादक साप्ताहिक वसंतराज.
4. डॉ. श्री राम शर्मा : बंजारा समाज : हैद्राबाद प्रकाशन हैद्राबाद.
5. भाई प्रेमसिंग जाधव : बंजारा दर्पण : विद्या प्रकाशन औरंगाबाद, 2002.
6. डॉ. दत्ता उध्दव जाधव : माहूरगडाची रायबागन : ए. वन. प्रकाशन, परभणी. 2015